By - Dr. Shailesh Kumar
Deptt. of economics
Raj. Singh College Siwan.

13.5.20

B.A.
Paper III

भारत में आर्थिक जोत एवं जोतों का आकार :
(The concept of economic holding & the size of farm)

अर्थ → आर्थिक जोत का अर्थ (Meaning of Economic Holding) -
हमारे देश में आर्थिक जोतों के निमार्ण पर बहुत अधिक जोर दिया जा रहा है। किन्तु आर्थिक जोत कहते किसे हैं ? वास्तव में, इसकी अनेक परिभाषाएँ दी गयी हैं। उदाहरण के लिए, डा० मन्न (Mann) के अनुसार, "आर्थिक जोत उस जोत को कहते हैं जिससे एक औसत परिवार का संतोषजनक तरीके से जीवन-निर्वाह हो सके।"
(Economic holding is that which will provide for an average family at the minimum standard of life considered satisfactory). कीटिंग के अनुसार भी, "आर्थिक जोत वह जोत है जिससे कृषि-कार्यों का आवश्यक व्यय निकाल देने के बाद किसान अपने परिवार के निर्वाह के लिए पर्याप्त मात्रा में उत्पादन कर सके।"
दूसरे शब्दों में, "आर्थिक जोत वह जोत है जिस पर कृषि करने से एक परिवार का भरण-पोषण बगैर किसी बाह्य सहायता से उचित स्तर पर हो सके।"

कॉंग्रेस कृषि सुधार समिति ने आर्थिक-जोतों के आकार के निर्धारण के निम्नांकित तीन मापदंड प्रस्तावित किये थे :

1. जीवन-स्तर : यानी जोतों का आकार इतना होना चाहिए जिससे कि एक कृषक परिवार को यथोचित जीवन-स्तर बनाये रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में उपज प्राप्त हो सके।

2. रोजगार :- यानी, जोत का आकार इतना होना चाहिए कि इससे एक सामान्य परिवार तथा बैलों की एक जोड़ी को पूरे समय के लिए कार्य उपलब्ध हो सके।

3. तकनीकी सुविधाएँ - यानी, आर्थिक जोत के निर्धारण में प्रत्येक क्षेत्र की कृषि-प्रणाली तथा तकनीकी व्यवस्था को भी ध्यान में रखना चाहिए।

Scanned by CamScanner

अतः आर्थिक जोत का निर्धारण एक विवादग्रस्त विषय है। फिर भी, उक्त बातों को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि "आर्थिक जोत वह जोत है जिस पर एक औसत परिवार के श्रम और पूँजी का आदर्श तरीके से अधिकतम उपयोग सम्भव हो सके तथा परिवार के सदस्यों का भरण-पोषण भी संतोषजनक न्यूनतम जीवन-स्तर के अनुकूल हो सके।" आर्थिक जोत कई बातों पर निर्भर करती है: जैसे भूमि की उर्वरा-शक्ति, खेती के तरीकों तथा फसलों की प्रकृति। इसी प्रकार सिंचित क्षेत्र में आर्थिक जोत का आकार असिंचित क्षेत्र की अपेक्षा कम होगा।

दूसरी ओर अखिल भारतीय-कृषि गणना (1976-77) के अनुसार भारत में 816 लाख कृषि जोतें थीं जिनमें 1633 लाख हेक्टर भूमि का क्षेत्र था। इस गणना के अनुसार विभिन्न आकार की जोतों का क्षेत्र निम्नांकित तालिका से स्पष्ट है-

जोतों का प्रकार	आकार	(संख्या हजार में)	%	क्षेत्र (लाख हेक्टर में)	%
1. सीमांत जोतें	1 हेक्टर से कम	45,523	54.5	176	10.7
2. लघु जोतें	1-2 हेक्टर तक	14,728	18.1	209	12.8
3. अर्द्ध-मध्यम जोतें	2-4 हेक्टर	11,666	14.3	323	19.9
4. मध्यम जोतें	4-10 हेक्टर	8212	10.1	497	30.4
5. बड़ी जोतें	10 हेक्टर से अधिक	240	3.0	428	27.2
कुल		8,1569	100.0	1633	100.0

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कुल जोतों का 54.5% भाग एक हेक्टर से कम है। दूसरी ओर, कुल जोतों का केवल 3% भाग, यानी

Scanned by CamScanner

24.4 लाख जोतें ही केवल 10 हेक्टर से अधिक की हैं। इनके अंतर्गत कुल 4.28 लाख हेक्टर भूमि, यानी कुल कृषि की जाने वाली भूमि का 27.2 % भाग है। (1970-71 में 30.9% भूमि बड़ी जोतों के अंतर्गत थी।) इससे देश में जोतों के छोटे आकार तथा इनके विषम वितरण का अन्दाजा लगता है।

निम्नांकित तालिका से भिन्न-भिन्न राज्यों में जोतों के औसत आकार का अन्दाजा (1970-71) की कृषि-गणना के अनुसार स्पष्ट होता है –

राज्य	1970-71 में जोतों का औसत आकार (हेक्टर में)	राज्य	1970-71 में जोतों का औसत आकार (हेक्टर में)
1. पंजाब	2.9	8. महाराष्ट्र	4.0
2. बिहार	1.5	9. मध्यप्रदेश	4.0
3. असम	1.7	10. कर्नाटक	3.2
4. उड़िसा	1.9	11. आन्ध्रप्रदेश	2.5
5. गुजरात	4.1	12. तमिलनाडु	1.2
6. हरियाणा	3.8	13. पं० बंगाल	1.2
7. राजस्थान	5.5	14. सम्पूर्ण भारत	2.3

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि भारत में जोतों का औसत आकार 2.3 हेक्टर है। राजस्थान में यह औसत 5.5 हेक्टर तथा महाराष्ट्र में 4.3 हेक्टर है। किन्तु, तमिलनाडु तथा पश्चिमी बंगाल में यह केवल 1.2 हेक्टर, केरल जैसे घनी आबादी वाले राज्य में यह औसत केवल 0.7 हेक्टर तथा बिहार में 1.5 हेक्टर ही पड़ता है। वर्त्तमान समय में जनसंख्या में वृद्धि तथा जोतों के उपविभाजन के कारण इसमें और कमी ही हुई होगी।

Scanned by CamScanner